कहानी कोको की

लेखनः डॉ. फ्रैन्सीन पैटरसन

छायाचित्रः डॉ. रॉनल्ड एच. कोहन

भाषान्तरः पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

क्या कोई गोरिल्ला सांकेतिक भाषा का उपयोग कर अपनी बात कह सकता है? डॉ. फ्रैन्सीन "पैनी" पैटरसन ने, जो उस वक़्त स्नातक छात्रा थीं, 1972 में इस सवाल की छानबीन शुरू की। साल भर के अन्दर कोको ने, जिस गोरिल्ला शिशु को उन्होंने बाद में गोद लिया, अपने पहले शब्दों के इशारे सीखे - खाना, पीना, जल्दी करो, और (चाहिए)। बाद में कोको की शब्दावली का विस्तार हुआ। उसमें अब तक पाँच सौ शब्द शामिल हो चुके हैं, जिनके सहारे कोको अपने लिए तोहफ़े मांगती है, मज़ाक सुनाती है, और अपनी भावनाओं को अभिव्यक्त करती है।

इस क़िताब में हम कोको के बचपन की कई अद्भुत कहानियाँ जानेंगे जिन्हें सुन्दर छायाचित्र सजीव करते हैं। इन चित्रों में कोको काम करते, आराम करते नज़र आती है; हम माइकल से मिलेंगे जो कोको का खेल साथी है, और उन पालतू पशुओं से भी परिचित होंगे, जिन्हें कोको प्यार करती है, जिनकी देखभाल करती है; हम कोको के एक ठेठ दिन को अनुभव करेंगे और पैनी के साथ यह जानेंगे कि "बोलने वाले" गोरिल्ला के साथ हर दिन किस कदर अचरजों से भरा होता है।

कहानी कोको की प्राकृतिक इतिहास की एक अनूठी कथा है, जिसने सभी उम्र के पाठकों को दिल जीत लिया है।

डॉ. फ्रैन्सीन पैटरसन ने स्टैनफर्ड विश्वविद्यालय से विकासात्मक मनोविज्ञान में डॉक्टरेट की। वे कोको के साथ 1972 से रह रही हैं। *नैशनल जियोग्राफिक* में लेख तथा कोको के साथ अपनी बातचीत प्रकाशित करने के अलावा डॉ. पैटरसन ने *कोकोस् किटन* की रचना की और *द एज्युकेशन ऑफ कोको* का सहलेखन भी किया। वे गोरिल्ला फाउन्डेशन की अध्यक्षा व शोध निदेशक हैं। वे वुडसाइड कैलिफोर्निया में रहती हैं।

डॉ. रॉनल्ड एच. कोहन गोरिल्ला फाउन्डेशन के सचिव हैं। उन्होंने कोको-परियोजना की शुरुआत से ही छायाचित्रों व विडियो द्वारा दस्तावेजीकरण किया। उनके चित्र *कोकोस् किटन* में भी शामिल हैं।

कहानी कोको की

लेखनः डॉ. फ्रैन्सीन पैटरसन

छायाचित्रः डॉ. रॉनल्ड एच. कोह्न

भाषान्तरः पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

कोको व माइकल के लिए

आभार

इस पुस्तक को तैयार करने में दी गई मदद
के लिए हम,

मार्था पिचरी, बारबरा हिलर, जीन फाइवल,
ग्रेस मैक्करॉन

का शुक्रिया अदा करना चाहते हैं।

"शानदार पशु गोरिल्ला"
- कोको

आमुख

पशुओं के साथ बातचीत कर पाने का ख़याल बहुत पहले से मनुष्य की कल्पना पर हावी रहा है। अगर वे हमसे अपनी बात कह पाते, तो वे अपने और इस दुनिया के बारे में हमें क्या कहते? जब मैं स्टैनफर्ड विश्वविद्यालय में स्नातक स्तर की छात्रा थी, इस ख़याल ने मुझे मोह लिया था।

क्या मैं एक गोरिल्ला को संप्रेषण करना सिखा सकती थी? मुझे जवाब मालूम न था, पर मैं कोशिश करना चाहती थी। अन्य वैज्ञानिकों ने चिम्पांज़ियों को इन्सानों के साथ संप्रेषण करना सिखाया था, पर गोरिल्ला के साथ ऐसा प्रयोग नहीं किया गया था। ऐसा करने वाली मैं पहली थी।

मैंने कोको के साथ अपना काम उसी तरह शुरु किया जैसा दूसरों ने चिम्पांज़ियों के साथ किया था - कोको को अमेरिकन साइन लैंग्वेज (एएलसी) सिखाने के साथ। इस सांकेतिक भाषा का इस्तमाल तीस लाख अमरीकी बधिर करते हैं। एएसएल में उंगलियों से शब्दों के हिज्जे नहीं किए जाते, इसमें तो कुछ कहने में बहुत ही समय लग सकता है। एएसएल शॉर्ट-कट (छोटा रास्ता) पकड़ता है। इसमें चेहरे, हाथ बाज़ु, व शरीर का उपयोग कर शब्द या विचार संप्रेषित किए जाते हैं। जब तुम यह पढ़ोगे कि कोको ने इशारे से क्या कहा है, तुम समझ जाओगे कि इशारों की भाषा कितने ग़ैर-ज़रूरी शब्दों को छोड़ देती है।

जितना मैंने सोचा था उससे कहीं ज़्यादा प्रगति कोको ने की है। वह इशारों से तुकबन्दी, हंसी-मज़ाक करती है, वह झूठ तक बोलती है। कोको के साथ मेरा जीवन अचरजों के साथ कुंठाओं से भी भरा होता है। क्योंकि कोको बहुत ही प्यारी होने के साथ अड़ियल भी है। मैं कोको को सिखाना कभी बन्द नहीं करुंगी, और एक तरह से वह भी मुझे सिखाना कभी बन्द नहीं करेगी। प्रोजैक्ट कोको 1972 में शुरू हुआ था, तब से अब तक हम दोनों की ज़िन्दगी कैसी रही, यह उसकी ही कहानी है।

कोको "चलो" का इशारा करते हुए।

छोटी कोको

कोको का जन्म सैन फ्रैंसिस्को चिड़ियाघर में 4 जुलाई 1971 को हुआ था। उसका नाम हानाबी-को रखा गया था, इस जापानी शब्द का मतलब होता है, "आतिशबाज़ी बच्चा।" पर उसे सभी कोको कहते थे। जब मैं उससे पहली बार मिली तब वह सिर्फ़ तीन महीने की थी। अपनी माँ की पीठ से चिपकी एक नन्ही गोरिल्ला। मैंने चिड़ियाघर के निदेशक से पूछा था कि क्या मैं उसे संकेतों की भाषा सिखा सकती हूँ। उन्होंने इन्कार कर दिया था।

मुझे कोको के साथ काम करने का मौका साल भर तक नहीं मिला। मैं जब उससे पहली बार मिली थी उसके बाद वह बीमार हो गई। एक भयानक रोग पूरी गोरिल्ला बसावट में फैला। नन्ही कोको मौत के कगार पर पहुँच गई, पर चिकित्सकों और चिड़ियाघर के कार्मिकों ने उसे बचा लिया। बीमारी के दौरान उसकी माँ उसकी देखभाल नहीं कर सकी, और उसे चिड़ियाघर की नर्सरी में रखा गया। वह स्वस्थ हुई पर बड़े गोरिल्लाओं के साथ नहीं रह सकती थी।

मैं कोको से मिलने हर दिन चिड़ियाघर जाती। मुझे शुरुआत में लगा कि वह मुझे पसन्द नहीं करती। वह मेरी उपेक्षा करती। जब मैं उसे उठाने की कोशिश करती वह मुझे काटती। पर क्योंकि मैं उससे मिलने से कभी नहीं चूकती थी वह धीरे-धीरे मुझ पर भरोसा करने लगी।

तब मैं हर सुबह उसे उठा दूसरे पशुओं से मिलवाने ले जाती। पर जब भी हम शिशु हाथी के पास से गुज़रते, कोको मुझसे ज़ोर से चिपट जाती। दरअसल हमारे पास आते ही वह ज़ारेदार चिंघाड़ती आवाज़ करता, जिससे कोको डरती थी।

मैंने कोको को शुरुआत में केवल तीन संकेत शब्द सिखाने की कोशिश कीः पीना, खाना, और (चाहिए)। मैंने चिड़ियाघर के सहायकों को भी "खाना" का इशारा सिखाया। वे जब भी उसे खाने को कुछ देते, वे यह संकेत दोहराते।

मैं जब भी कोको को उसकी बोतल देती मैं "पीना" का इशारा करती।

मैं उसके हाथों से "पीना" का इशारा करवाती।

कोको के साथ काम शुरू करने के तक़रीबन एक महीने बाद मैं एक सुबह उसके अल्पाहार के लिए फल काट रही थी। कोको मुझे देख रही थी।

"खाना," उसने इशारे से कहा।

मुझे अपनी आँखों पर भरोसा ही नहीं हुआ।

"खाना," उसने फिर से इशारा किया। कोको ने मुझसे बात की थी! मैं खुशी से उछलना चाहती थी। कोको को फौरन अहसास हो गया कि मैं खुश हूँ। वह भी उत्तेजित हो गई। उसने एक बाल्टी उठाई और अपने सिर पर औंधी धर ली और खेल कक्ष में चारों ओर दौड़ती फिरी।

कोको लिपस्टिक का इशारा करते हुए।

कोको सैन फ्रैन्सिस्को चिड़ियाघर में फिसलपट्टी पर सिर की ओर से फिसलते हुए।

जब कोको तीन साल की हुई उसके लिए एक बड़ी दावत दी गई। उसके तोहफों में एक दूरबीन भी थी।

"देखो," उसने बड़े फ़क्र से गले में दूरबीन लटका चलते हुए इशारा किया।

उसने अपना लगभग पूरा केक बड़ी सावधानी से चम्मच से खाया। पर जब आखिरी टुकड़े की बारी आई कोको खुद को रोक नहीं सकी। उसने टुकड़ा उठाया और मुँह में ठूंस लिया।

"और खाना," उसने इशारा किया।

क्योंकि उसकी सालगिरह थी, उसके अशिष्ट बरताव के बावजूद उसे टोका नहीं गया।

छह साल की होते-होते कोको सरल एक शब्द के अनुरोध, जैसे "ऊपर," "पीना," "और" के इशारे करने लगी। कोको तेज़ी से इशारे सीख रही थी, और उन्हें साथ जोड़ने भी लगी थी।

"वहाँ मुँह, मुँह तुम वहाँ," कोको ने मुझसे तब इशारों से कहा जब वह चाहती थी कि मैं ठंडी खिड़की पर फूंक मारुं ताकि उस पर धुंध जमे और हम उंगलियों से उस पर चित्र बना सकें।

"डालो वह जल्दी, पीना जल्दी," जब वह बहुत प्यासी थी उसने इशारे से कहा था।

कोको ने चिड़ियाघर छोड़ा

कोको तब तीन साल की थी, जब यह तय किया गया कि उसे स्टैनफर्ड विश्वविद्यालय परिसर ले जाना चाहिए, जहाँ मैं स्नातक छात्रा थी। यहाँ वह पास के वन्यजीव पार्क के नर गोरिल्ला से मिल सकती थी। साथ ही यहाँ चिड़ियाघर की तुलना में शान्ति भी थी। मेरी उम्मीद यह थी कि यहाँ कोको अपने भाषा पाठों पर बिना व्यवधानों के ध्यान दे सकेगी।

नई जगह पर कोको एक भयभीत गोरिल्ला थी। वह अपने गुस्से का प्रदर्शन ट्रेलर के दरवाज़े को पीट कर किया करती।

वह बाहर निकलने के लिए "घर जाना," का इशारा करती। उसे तब यह पता नहीं था कि वह ट्रेलर ही उसका घर था। कभी उसे रात को बुरे सपने आते और कभी वह सोते समय रोती। मैं उसके साथ हर रात तब तक सोती रही, जब तक उसने गोरिल्लाओं की रोने की "व्हू-व्हू" आवाज़ निकालनी बन्द नहीं कर दी।

जब वह अपने नए घर में सहज हो गई। कोको ने तेज़ी से तरक्की की। वह भाषा का आश्चर्यजनक तरीकों से उपयोग करने लगी। वह मुझसे अंग्रेजी सुनती और अंग्रेजी में अपने सवाल पूछती, और जवाब भी देती। एक दिन उसने कैंडी शब्द सुना। चबाई जा सकने वाले विटामिन की गोलियों के लिए उसने इस शब्द का इस्तेमाल करना सीखा।

"कैंडी, कैंडी, है कैंडी," उसने अपनी पसन्दीदा चीज़ पाने की कोशिश में कहा।

मैंने भी अपना पाठ सीख लिया। आइंदा से कोको की मौजूदगी में मैं इस शब्द का उच्चारण करने के बदले उसके हिज्जे करने लगी।

पाँच साल की होते-होते कोको 200 से अधिक शब्द संकेत जान चुकी थी। मैंने कोको द्वारा काम में लिए जाने वाले हरेक शब्द को रिकार्ड किया, वह जो कुछ करती उसके वीडियो बनाए। इसलिए ताकि मैं सांकेतिक भाषा के उसके उपयोग का बाद में अध्ययन कर सकूँ। कोको जितने ज़्यादा शब्द सीखती गई, उतना ही अधिक वह अपनी शख्सियत को भी दर्शाती गई। वह मुझसे बहस करती, अपने विनोदी स्वभाव को दर्शाती, और बड़ी दृढ़ता से अपनी राय व्यक्त करती।

"तुम्हारी आँखें सुन्दर हैं," एक आगन्तुक ने कोको से मिलने के बाद इशारे से कहा।

कोको ने सोचते हुए अपनी नाक पर उंगली फिराई।

"ग़लत," कोको ने तब अपना इशारा चुना।

पर कोको इशारों से झूठ भी बोलती थी।

तब एक बार मैंने उसे ट्रेलर की जाली में एक चॉपस्टिक घुसेड़ते पकड़ा। "क्या कर रही हो? मैंने इशारा कर पूछा।

कोको ने फौरन ही चॉपस्टिक अपने मुँह में घुसा ली।

"मुँह धुँआ," उसने सिगरेट पीने का इशारा करते कहा। तक एक बार मैंने उसे वह क्रेयॉन चबाते पकड़ा जिससे उसे चित्र बनाना था।

"तुम वह खा तो नहीं रही?" मैंने कोको से पूछा।

"होंठ," कोको ने क्रेयॉन फुर्ती से मुँह से निकाला और होठों पर फिराया, मानो लिपस्टिक लगा रही हो। पर वह मुझे छका नहीं सकी!

कोको को प्लास्टिक की चम्मचों को तोड़ने की बुरी आदत थी। मेरे दोस्त रॉन को उसे ऐसा करने से रोकना आता था।

"बढ़िया! उन्हें तोड़ डालो," रॉन ने इशारे से कहा।

कोको जिस चम्मच को मोड़ने ही वाली थी, उसने उसको नीचे रखा। मुझे लगा कि उसे कोई तरकीब सूझी है। कोको ने तब चम्म्च फिर से उठाया और उसे चूमने लगी।

जब कोको बहुत ही बुरा बरताव करती है, उसे ट्रेलर के एक कोने में भेज दिया जाता है।

"ढीठ शैतान," वह खुदको इशारे से कहती है। वह जानती है कि उसने शैतानी की है। पर अगर शैतानी छोटी-मोटी हो तो वह कुछ देर बाद खुद को माफ़ कर देती है। पर अगर उसने कुछ बहुत ही बुरा किया हो, तो वह मेरा ध्यान खींचने के लिए मुड़ती है।

"सॉरी," वह इशारे से कहती है।

पर अधिकतर समय कोको शैतान नहीं खिलंदड़ होती है। वह इशारों की भाषा में मुझे बता भी देती है वह एक खेल खेलना चाहती है।

"समय चुपचाप पीछा (करो)," वह तब इशारे से कहती है जब उसे छिपम-छिपाई खेलनी होती है।

"कोको, तुम कहाँ हो?" मैं ज़ोर से कहती हूँ। तब मैं उसे अवन में, अल्मारी में और कई जगहों पर ढूंढती हूँ। जब वह अपनी छिपने की जगह से बाहर निकलती है, मैं हमेशा भौंचक होने का नाटक करती हूँ।

कोको ने जो इशारे सीखें हैं उनका उपयोग वह लोगों के साथ हंसी-मज़ाक करने में भी करती है। एक दिन मेरी दोस्त बारबरा ने कोको को सफेद तौलियों से अपना बिछौना बनाते देखा।

"वह लाल," कोको खुद को इशारा कर रही थी।

"तुम बेहतर जानती हो कोको, यह रंग कौन-सा है?" बारबरा ने पूछा।

"लाल, लाल, लाल," कोको इशारा करती गई।

बरबरा ने हार मान ली। उसने सोचा था कि कोको सफ़ेद का इशारा सीख चुकी है। पर तब उसने कोको को मुस्कुराते देखा।

"लाल," कोको ने फिर से इशारा किया। तब उसने सफ़ेद तौलिये से धागे का एक छोटा-सा टुकड़ा उठा बारबरा को दिखाया। उसका रंग क्या था भला? लाल!

कोको और माइकल

जब कोको पाँच साल की हुई मुझे लगा कि उसके लिए एक गोरिल्ला साथी तलाशना चाहिए। एक दिन मैंने कोको से कहा, "एक नया बेबी आ रहा है।" कोको बेबी के ख़याल से खुश थी।

"गलत, बड़ा," कोको ने चंचल छोटे गोरिल्ला को देख इशारा किया।

जाहिर था इस नए खेल साथी और कोको की 'बेबी' की कल्पना में कोई मेल नहीं था। वह तीन साल का था ओर उसका नाम किंग-कांग रखा गया था। मैंने उसका नाम बदल कर माइकल कर दिया, क्योंकि गोरिल्ला किंग-कांग जैसा आक्रामक बरताव करते ही नहीं हैं। वे शर्मीले और कोमल बरताव करने वाले जीव होते हैं।

मैं इस दूसरे गोरिल्ला को भी संकेतों की भाषा सिखाना चाहती थी। मेरी उम्मीद यह भी थी कि कोको और माइकल किसी दिन जोड़ा बनाएंगे और उनका बच्चा होगा।

हमने माइकल को भी इशारों की भाषा तब से ही सिखानी शुरू कर दी जब वह हमारे साथ रहने आया। बेशक वह उतने इशारे नहीं सीख सका है जितने कोको जानती है। पर वह अच्छा छात्र है और अक्सर कोको से ज़्यादा समय तक अपने पाठों पर ध्यान केन्द्रित कर सकता है।

शुरुआत में कोको अपने नए साथी से जलती थी। वह उसे बुरा-भला कहती और उस पर उन चीज़ों को करने को दोष मढ़ती जो उसने की ही नहीं होतीं।

"बेवकूफ़ पाखाना," माइकल के बारे में पूछने पर कोको ने कहा।

"बदबू, खराब कद्दू गोरिल्ला," माइकल ने पलट कर कहा।

जब माइकल को डांट पड़ती, कोको को देख कर मज़ा आता। और कई बार तो वह काम करने को कोको ने ही माइकल को उकसाया होता। जब मैं माइकल को अच्छा गोरिल्ला बनने को कहती, कोको को सुनना अच्छा लगता।

कोको "हह्, हह्, हह्, हह्," की ध्वनि निकालती, जो गोरिल्ला के हंसने की गहरी, भर्राई-सी आवाज़ है।

कोको "खाना" का इशारा करते हुए।

पर कोको और माइकल को साथ-साथ खेलना पसन्द था और वे अक्सर एक-दूसरे को इशारे भी करते हैं।

"गुदगुदी, प्लीज़," कोको अपनी बगल को थपथपा कर कहती है। माइकल उसकी ओर उछलता है और उसको गुदगुदी करने की जगह तलाश लेता है। तब वे आपस में कुश्ती करते हैं। वे दीवारों को पीटते, लुढ़कते-लतियाते हैं। ज़बरदस्त उधमबाज़ी करते हैं, पर खेल-खेल में।

कोको गुदगुदी का इशारा करते हुए।
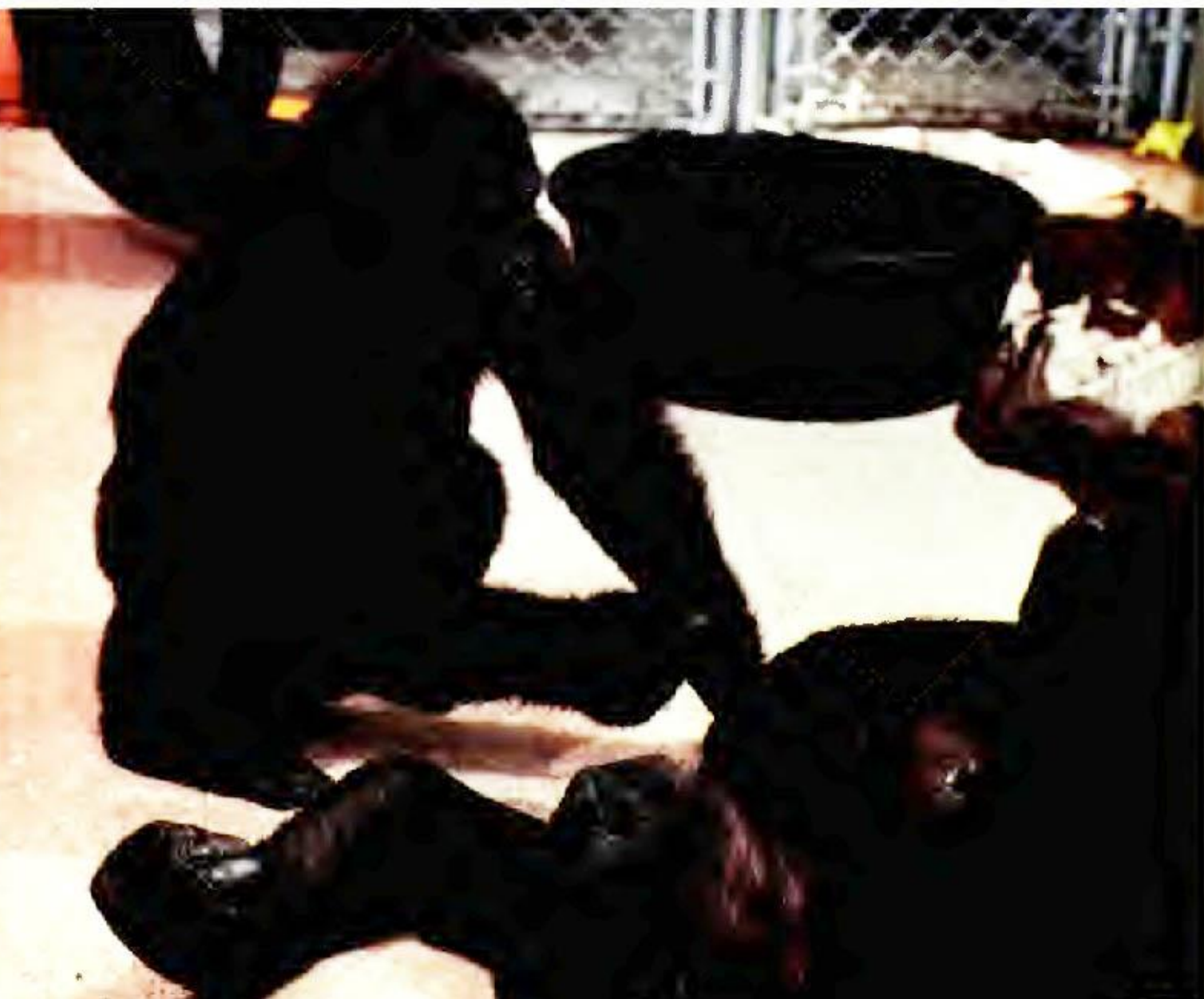
कोको और माइकल को स्टैनफर्ड में मेरी गाड़ी में सवारी करना बेहद पसन्द था।

"वहाँ जाओ," कोको पिछले सीट पर बैठे ड्राइवर की तर्ज पर इशारे से कहती। उसे पता था कि विश्वविद्यालय परिसर में सोडा मशीन कहाँ है, सो वह उसकी दिशा की ओर इशारा करती। कुछ ख़ास मौकों पर वह गाड़ी से उतरती, सोड़ा मशीन में क्वार्टर का सिक्का डालती। छात्र-छात्राएं कोको को सोडा का कैन उठाए मेरी गाड़ी में वापस बैठते देख भौंचक रह जाते!

"मुड़ो, मुड़ो," वह दाहिनी या बायीं ओर संकेत करती। खास कर तब जब घर पास आने लगता, पर वह और सवारी करना चाहती।

कोको छोटे आकार वाले वृक्ष मेंढ़को से भी आकर्षित होती थी, जो उसे ट्रेलर के आस-पास मैदान में नज़र आते थे। ये नन्हे मेंढ़क अपना रंग बदल सकते थे - हरे से लाल और तब सुनहला। मैं पहले कोको को उन्हें पकड़ने ही नहीं देती थी। मुझे डर लगता था कि कहीं वह ग़लती से उन्हें चोट न पहुँचा दे। पर एक दिन कोको को एक मेंढ़क खेल मैदान में मिला।

"बगल," उसने इशारा कर मुझे वह जगह दिखाई जहाँ उसने अपने नए मेंढ़क दोस्त को रखा था। वह उसे अपनी बगल में दबाए घूमती रही, जो एक जेब जैसी जगह थी। गोरिल्ला बगल में किसी चीज़ को दबाए आराम से घूम-फिर सकते हैं। पर मेंढ़क वहाँ से कूद कर भाग गया!

कोको का मेंढ़कों को पकड़ने का अपना ही एक ख़ास तरीका भी था। वह अपना बड़ा झबरा पैर छोटे-से मेंढ़क के पैर के किनारे पर रखती थी।

जब मैंने पहली बार उसे ऐसा करते देखा, मैं डरी कि वह उसे कुचल ही देगी। पर कोको ने ऐसा कभी नहीं किया। वह सावधानी से उसके पैर के पिछले हिस्से को दबाती, तब उसे उठाने नीचे झुकती। इतने बड़े गोरिल्ला को उस नन्हे से जीव को पकड़ने की कोशिश करते देखना, बड़ा मज़ेदार हुआ करता था।

कोको की पालतू बिल्लियाँ

कोको के पहले बिलौटे ऑल-बॉल के आने के पहले, वह कई छोटे जानवरों से खेल चुकी थी। एक बार उसने एक ब्लू जे (छोटी चिड़िया) से दोस्ती कर ली थी। वह शिशु पाखी अपनी माँ को खो चुकी थी, सो मैं उसे एक पिंजड़े में रखती थी। पर दिन में कई बार उसे खिलाती थी। एक दिन मैं पिंजड़े को कोको के कमरे में ले गई।

"उसे खोलो," कोको ने दरवाज़े की ओर इशारा कर कहा।

मैंने दरवाज़ा खोल दिया और छोटी चिड़िया उड़ कर बाहर आ गई ।

"अच्छा, चाहिए," उसने इशारा किया।

"इसके के लिए कोई नाम सोचो" मैंने कहा।

"जीभ," कोको ने जवाब दिया।

"हाँ उसकी जीभ है," मैंने कहा, "पर इसका नाम क्या रखना चाहोगी?"

"जीभ," उसने फिर से इशारा किया। हो सकता है कोको ने यह नाम इसलिए चुना हो, क्योंकि शिशु चिड़िया खाना मांगने के लिए जब बड़ा-सा मुँह खोलती, हमेशा उसकी जीभ दिखाई देती थी।

कोको "बॉल" का इशारा करते हुए।

ऑल-बॉल के पहले भी कोको दूसरी बिलौटियों के साथ खेल चुकी थी। पर उसका अपना पहला पालतू बिलौटा ऑल-बॉल ही था।

"कोको प्यार बॉल, मुलायम अच्छी बिल्ली बिल्ली," वह इशारे से कहती थी।

तब 1984 के दिसम्बर महीने में, एक दुर्घटना में ऑल-बॉल की मौत हो गई। मुझे कोको को यह ख़बर सुनानी पड़ी। उसने पहले तो ऐसा जताया मानो उसने मेरी बात सुनी ही न हो। पर बाद में उसने बताया कि उसे कैसा लगा था।

"रोना, उदास, भौं सिकोड़ना," कोको ने संकेत किया।

"ऑल-बॉल को क्या हुआ?" मैंने पूछा।

"अंधा, सोना बिल्ली," उसने जवाब दिया।

"हाँ, हमें अब वह नहीं दिखती, है ना?"

हम दोनों ही बहुत उदास थे।

"इस साल क्रिसमस पर तुम्हें क्या चाहिए?" कोको की दोस्त बारबरा ने कुछ दिनों बाद उससे पूछा।

"चाहिए बिल्ली," कोको ने इशारे से कहा।

"पसन्द वह," कोको ने बिना पूंछ वाली बिल्ली के चित्र को देख कर इशारे से कहा। पर जब रोएंदार नारंगी रंग की बिलौटी उसके पास रहने को आई, कोको उससे दूर भागती रही।

अपनी बिलौटी के लिए कोई नाम सोचा है? मैंने उससे पूछा।

"होंठ, लिपस्टिक," कोको ने इशारे से बताया।

कोको घड़ियाल का संकेत करते हुए।

माइकल ने भी कोको की नई बिल्ली का एक नाम रखा था, "केला"। "मेरी बिल्ली लाल," माइकल ने इशारा किया। माइकल कोको को देखता रहा था। सो अब उसे भी अपनी पालतू बिल्ली चाहिए थी।

सो कोको की यह दूसरी बिल्ली माइकल को दे दी गई और कोको ने अंततः अपने लिए एक सलेटी बिलौटी को चुना।

"बेबी, मिलने गोरिल्ला," कोको ने इशारे से कहा।

"क्या तुमने उसके लिए कोई नाम सोच लिया है?" मैंने जानना चाहा।

"वह धुंआ। धुंआ धुंआ," उसने जवाब दिया।

यह बिलौटी धुंआए सलेटी रंग की थी, सो हम उसे स्मोकी कहने लगे।

जब कोको से पूछा जाता है कि उसका पसन्दीदा पशु कौन है, वह हमेशा इशारे से "गोरिल्ला" कहती है। पर कोको सभी जानवरों को पसन्द नहीं करती। वह भी उसे पशु से डरती है जिससे जंगल में रहने वाले सभी गोरिल्ला डरते हैं: मगरमच्छ। जब वह छोटी थी तो जिन चीज़ों को उसे छूना मना था, उन पर मैं रबर से बने घड़ियाल टांग दिया करती थी। पर अब वह बड़ी हो गई है, रबर का घड़ियाल उसे इतना नहीं डराता। वह अपना चहेता मज़ाक करने घड़ियाल के खिलौने को पीठ पीछे छिपा किसी दोस्त के पास पहुँचती है, और तब अचानक उसे सामने निकाल तेज़ी से हिलाती है। वह उम्मीद रखती है कि दोस्त ज़ोर से चीखे और उतना ही डरने का नाटक करे, जितना वह खुद इस तरह चौंकाए जाने पर डरती।

कोको का दिन

जब कोको आठ और माइकल छह साल के हो गए, हमें फिर से जगह बदलनी पड़ी। हम अब वुडसाइड, कैलिफोर्निया के जंगल वाले इलाके में रहते हैं। यहाँ दोनों गोरिल्लाओं के लिए बाहर खुले में खेलने के लिए ज़्यादा जगह है। कोको और माइकल अब एक बड़े ट्रेलर में रहते हैं, जिसमें उनके अपने-अपने सोने के कमरे और रसोइयाँ हैं।

कोको हर सुबह साढ़े आठ बजे उठती है। उसका नाश्ता अमूमन दूध, सिरियल और फलों का होता है। अधिकतर दिनों, वह नौ से दस बजे तक इशारों की भाषा का अभ्यास करती है। अब वह पाँच सौ से भी ज़्यादा संकेतों को जानती है। फिलहाल वह जिन दो इशारों को सीख रही है वे हैं, "भूलना" और "किस लिए"। वह हवाई जहाज़, नाभि, उबाऊ, और अचरज के इशारे जानती है। उसने हाल में दो इशारे ईजाद किए हैं - जेब और सुनने की मशीन (हियरिंग-ऐड) के लिए। वह यह जानती है कि "कैंडी" क्या होती है। और अगर मैं पिग लैटिन में, शब्द के अक्षरों को उलट कर "एंडीके" कहूँ, तब भी वह समझ जाती है कि मैं क्या कहना चाह रही हूँ।

पैनी "कौन" का इशारा करते हुए, और कोको इशारे से अपना नाम बताते हुए।

दस बजे तक कोको अपने पाठों से थक जाती है और उसे आराम की ज़रूरत होती है।

"माइक अन्दर चाहिए," कोको अपनी शिक्षिका से कहती है।

कोको और माइकल क़रीब एक घंटे तक साथ-साथ खेलते हैं। वे कोको के खिलौनों से खेल सकते हैं, पर कोको अब भी माइकल से जलती है और हमेशा अपनी चीज़ें साझा नहीं करना चाहती। कोको के पास एक तिपहिया साइकिल, कई गुडियाएं, कहानियों की क़िताबें, रबर का डायनासोर और एक स्केटबोर्ड भी है।

"क्या तुम स्केटबोर्ड की सवारी करना चाहती हो?" मैं कोको से पूछती हूँ।

कोको भौं चढ़ा कर मुझे देखती है, पर अपने बोर्ड पर बैठ जाती है। और ट्रेलर में आगे-पीछे घूमती है - धीमे-धीमे। वह उस पर कभी अकेली खड़ी नहीं होती। कोको मुझे कई बार उस पर से गिरते देख चुकी है।

ग्यारह बजे फिर से काम शुरू करने का समय हो जाता है। कई दिनों वह पढ़ने का अभ्यास करती है। वह लिखित शब्द जैसे, बिल्ली को देखती है और उसका इशारा करके दिखाती है। हम उसे बिल्लियों के बहुत ज़्यादा चित्र नहीं दिखा सकते, क्योंकि वह अब भी ऑल-बॉल जैसी दिखने वाली बिल्ली को देख दुखी हो जाती है। ऑल-बॉल उसका पहला बिलौटा जो था।

कोको और माइकल परीक्षा भी देते हैं। बेशक वे गलतियाँ करते हैं, पर कुछ गलतियाँ किसी गोरिल्ला को गलत जवाब जैसे लगते ही नहीं हैं। परीक्षा का एक सवाल था जिसमें कोको को कहा गया कि वह दो ऐसी चीज़ों की ओर इशारा करे जो खाने में अच्छी हों। कोको ने चित्र देखे - चित्र एक ब्लॉक, सेब, फूल, जूता और आइसक्रीम के थे। कोको ने सेब की ओर इशारा किया, तब एक फूल की ओर!

कभी जब कोको गलती करती है, उसे लगता है कि वह मज़ाकिया हरकत कर रही है।

चिड़िया के आँख के चित्र की ओर इशारा करते हुए वह हाथों से "नाक" का संकेत करती है।

तब वह खिलौने वाली चाभी को सिर पर धर लेती है।

"टोपी," वह इशारा करती है और ज़ोर से हंसती है।

वह खेल कमरे में हाथ हिलाते, मुस्कुराते, कदम-ताल करती है। वह अपने मज़ाक पर हंसना बन्द ही नहीं कर पाती, कोको जब जी चाहे एक खिलन्दड़ गोरिल्ला बन जाती है।

जब कोको सवाल पूछे जाने से थक जाती है, वह अड़ियल बन सकती है। वह सही जवाब को घूरती है पर इशारा ग़लत की ओर करती है। या अपनी बाज़ुओं को बांध काम ज़ारी रखने से इन्कार कर देती है। वह गरदन झुका अपनी नाभि को ताकती रहती है।

दोपहर को कोको खाना खाती है - फलों का रस, ताज़ी सब्ज़ियाँ, उबली मुर्गी या कोई दूसरा प्रोटीन।

"क्या तुम दोपहर के खाने के बारे में एक लम्बा वाक्य बना सकती हो?" मैं उससे पूछती हूँ।

"प्यार लंच खाना, स्वाद माँस," कोको जवाब देती है।

शाम को वह स्नैक (अल्पाहार) करती है। कोको और माइकल दोनों को पीनट बटर और फल के सैंडविच पसन्द हैं।

"ज़रूरत कैंडी बीन," खा चुकने के बाद कोको अपनी चबाने वाली विटामिन की गोलियों की ओर इशारा कर मांगती है।

एक दिन एक वैज्ञानिक, जो चिंपाज़ियों का अध्ययन करते थे, कोको को देखने आए।

"जब लोग तुम्हारे पास होते हैं तो तुम्हें क्या अच्छा लगता है, वे खड़े रहें या नीचे बैठें?" मैंने कोको से पूछा।

"नीचे!" कोको ने अपनी बात साफ़ करने के लिए फ़र्श पर लेट तब इशारा किया जब मैंने सवाल दूसरी बार पूछा।

कोको को चुप रहने वाले दोस्त पसन्द हैं। वह छोटे बच्चों और बड़े-बुज़ुर्गों से कोमलता से पेश आती है।

जब कोको लोगों से पहली बार मिलती है, वह उनकी "फूंक जाँच" करती है। वह उनके चेहरों पर फूंक मारती है, जिसके बाद वह उनके बारे में और जानने के लिए एक इशारे का इस्तेमाल करती है।

"नकली दाँत?" वह इशारा करती है ताकि देख सके कि उनके सोने के दाँत या दाँतों में रुपहली भरावट है या नहीं।

कोको उनके गहनों और कपड़ों के बारे में भी टिप्पणी करती है। वह कह सकती है कि वे अपने ब्रीफकेस या पर्स में जो है, उसे दिखाएं। शान बघारने के लिए वह अपने खिलौने या दीवारों पर लगे पोस्टर दिखा सकती है।

कोको को फोटो खींचना पसन्द है, और अगर मेरा दोस्त रॉन उसे पकड़ने दे तो वह कैमरे को पकड़ना पसन्द करती है। उसे फ्लैश की चमक देखना अच्छा लगता है।

"प्यार कैमरा," वह इशारा कर बताती है।

रात के खाने का समय क़रीब साढ़े चार बजे होता है। इस खाने में लगभग हमेशा ही ताज़ी सब्ज़ियाँ होती हैं। कोको को साबुत भुट्टे पसन्द हैं और टमाटर भी। पर वह मशरूम या मूलियाँ नहीं खाती।

"गंदी बदबू" उन्हें अपनी थाली में देख वह इशारे से कहती है।

सोने के पहले कोको कुछ देर "शान्त समय" के लिए जाती है। इस दौरान कभी वह अपने प्रशंसक बच्चों के भेजे पत्रों की ढेरी को देखती है, या अपनी गुड़ियों और डायनासोर से कोई डरावना खेल भी खेल सकती है।

"दाँत काटना" वह रबर के डायनासोर से अपनी गुड़ियों पर हमला करवा इशारा करती है। गुड़िया चीखती है और कोको जल्दी से डायनासोर को उठा हवा में घुमाती है। तब अपनी गुड़िया को जाँचती है, उसे चुम्मियाँ देती है। तब वह डायनासोर को भी चूमने का फैसला करती है और उसका नाटक-खेल खत्म हो जाता है।

कोको को अपनी सचित्र क़िताबें देखना पसन्द है, या फिर स्मोकी से खेलना भी। वह स्मोकी बालों पर ब्रश फिराती है, जैसे मैं फिराती हूँ। वह अपनी बिलौटी को बिलकुल साफ़-सुथरा रखती है।

सात बजे कोको और माइकल का सोने की तैयारी करने का समय हो जाता है। मैं कोको को संभालती हूँ और मेरा दोस्त माइकल को। हर रात कोको अपना बिछौना बनाती है, जैसे जंगल में रहने वाले गोरिल्ला बनाते हैं। कोको अपना गोल बिछौना कम्बलों, तौलियों, पुराने कपड़ों और दरियों को एक सपाट टायर पर बिछा कर बनाती है।

"दाँत माँजना," कोको संकेत से कहती है।

मैं उसके पिछले दाँत साफ़ करती हूँ, पर सामने वाले दाँत वह खुद साफ़ कर सकती है। मैं उसकी हथेलियों और तलवों की त्वचा पर बेबी ऑइल मलती हूँ, ताकि वे मुलायम और नम रहें।

तब मैं कोको को उसका पसन्दीदा अल्पाहार सेब, बादाम-मूंगफली जैसा कुछ देती हूँ। मैं इसे "नाइट डिश" कहती हूँ। मुझे लगता है कि यह सोने को कुछ मज़ेदार बनाता है। कोको सोने के समय को हमेशा टालती है, क्योंकि उसे रात को अकेले छोड़े जाना अच्छा नहीं लगता।

"गुदगुदी वहाँ," वह इशारे से वह जगह बताती है जहाँ वह मुझसे गुदगुदी करवाना चाहती है।

"कोको तुम जानती हो कि सोने का समय हो चुका है," मैं कहती हूँ।

"वह लाल," वह मेरी कमीज़ की ओर इशारा करती है। वह विषय बदलने की भरसक कोशिश करती है। पर अब सोने का समय पार हो चुका है।

"गुड नाइट, कोको," मैं इशारा कर दबे पाँव कमरे से निकल जाती हूँ। मैं घर जाने के पहले माइकल के कमरे में भी झांकती हूँ, यह देखने कि वह ठीक से सो रहा है कि नहीं। तब मैं घर लौटती हूँ, जो सिर्फ पचास फीट की दूरी पर है। मेरे बिस्तर के पास एक स्पीकर है जो मुझे ट्रेलर की आवाज़ें सुनने देता है। कोको और माइकल जानते हैं कि अगर उन्हें ज़रूरत पड़े तो मैं हमेशा मौजूद रहूँगी।

उपसंहार

मुझे उम्मीद है कि कोको और माइकल हवाई में अपने नए घर में जा सकेंगे। वहाँ का मौसम गर्म है और उन दोनों के आज़ादी से घूम-फिर पाने के लिए कई एकड़ों की वनभूमि है। वह स्थान अफ्रीका के उष्णकटिबंधीय जंगलों जैसा है, जहाँ के समतल क्षेत्र में पाए जाने वाले गोरिल्ला प्रजाति के कोको और माइकल हैं। हो सकता है कि कोको और माइकल वहाँ अपना परिवार शुरु करें। गोरिल्लाओं के बारे में और जानने की दिशा में यह एक महत्वपूर्ण कदम होगा। मैं जानना चाहती हूँ कि वे अपने बच्चों को संकेतों की भाषा सिखाएंगे या नहीं।

दुनिया में कोको और माइकल जैसे गोरिल्ला अब सिर्फ़ कुछ हज़ार ही बचे हैं। हमने यह समझना अब शुरु ही किया है कि वे किस कदर चतुर और कोमल पशु हैं। हम उनके बारे में और भी बहुत कुछ जान सकते हैं। हमें उनका संरक्षण करना चाहिए ताकि वे विलुप्त ही न हो जाएं। "जाना आतुर" कोको तब इशारा करती है, जब वह मेरे दिखाए चित्र देखती है जिनमें पेड़, अनन्नास के झाड़ और द्वीप नज़र आते हैं। मैं जानती हूँ कि उसे वहाँ रहना बहुत अच्छा लगेगा।